रोम-रोम से निकले प्रभुवर नाम तुम्हारा, हाँ ! नाम तुम्हारा।
ऐसी भक्ति करूं प्रभुजी पाऊँ न जन्म दुबारा ।।टेक।।

जिनमन्दिर में आया, जिनवर दर्शन पाया।
अन्तर्मुख मुद्रा को देखा, आतम दर्शन पाया।।
जनम-जनम तक न भूलूंगा, यह उपकार तुम्हारा।।१।।

अरहंतों को जाना, आतम को पहिचाना।
द्रव्य और गुण-पर्यायों से, जिन सम निज को माना।।
भेदज्ञान ही महामंत्र है, मोह तिमिर क्षयकारा।।२।।

पंच महाव्रत धारूँ, समिति गुप्ति अपनाऊँ।
निर्ग्रन्थों के पथ पर चलकर, मोक्ष महल में आऊँ।।
पुण्य-पाप की बन्ध श्रृंखला नष्ट करूं दुखकारा।।३।।

देव-शास्त्र-गुरु मेरे, हैं सच्चे हितकारी।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की महिमा, जग से न्यारी।।
भेदज्ञान बिन नहीं मिलेगा, भव का कभी किनारा।
रोम-रोम से निकले प्रभुवर नाम तुम्हारा, हाँ! नाम तुम्हारा।